श्रीकृष्ण द्वारा सीखी चौदह विद्याएँ और चौसठ कलाएँ

सर्वांग

श्रीकृष्ण द्वारा सीखी चौदह विद्याएँ
और चौसठ कलाएँ

प्रकाशक
निदेशक
आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, शामला हिल्स, भोपाल
(मध्यप्रदेश, भारत)
+91-0755-2661640, 2661948
mplokkala@rediffmail.com, mptribalmuseum13@gmail.com
triveni.museum101@gmail.com
web: mptribalmuseum.com

प्रकाशन वर्ष- 2019 **द्वितीय संस्करण**
मूल्य- **रू. 200/- (रूपये दो सौ केवल)**

आकल्पन- **हरचन्दन सिंह भट्टी**
चित्रांकन- **आकाश महाराणा, पुरी**
आलेख संग्रह- **डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन**
मुद्रण- **मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल**

सर्वांग

श्रीकृष्ण द्वारा सीखी चौदह विद्याएँ और चौंसठ कलाएँ

सम्पादक
अशोक मिश्र

बलराम, श्रीकृष्ण और सुदामा

सांदीपनि आश्रम, उज्जैन

कुण्डेश्वर महादेव मन्दिर

गुरु सांदीपनि और श्रीकृष्ण की बहु–प्रचलित लोक कथाओं में से एक कथा जो शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत श्रीकृष्ण के द्वारा अपने गुरु सांदीपनि से गुरुदक्षिणा लेने के आग्रह के लिये की गई है। गुरुदक्षिणा के लिये श्रीकृष्ण का गुरु से अनुरोध करना, गुरु द्वारा इंकार, फिर पत्नि के कहने पर अपने पुत्र जो शंखासुर के द्वारा समुद्र में बन्दी बनाया गया है, उसको मुक्त कराकर सौंपने के लिये कहना विचारणीय है। कथा में गुरुमाता और पुत्र की विशेष चर्चा नहीं होती और न ही मुक्ति के उपरांत पुत्र का कोई योगदान कहा गया है।

गुरुदक्षिणा के इन कथा प्रतीकों पर विद्वतजनों को विचार करना चाहिये। निश्चय ही गुरुमाता और गुरुपुत्र की विशिष्ट चर्चा कथा के उत्तरार्द्ध में भी नहीं होने से उसके प्रतीकार्थ को समझना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि गुरुमाता गुरु सांदीपनि के प्रेम प्रतीक स्वरूप में है। श्रीकृष्ण के बार–बार आग्रह से गुरु का प्रेम (पत्नि) गुरुदक्षिणा के रूप में अपने पुत्र (ज्ञान) का शंखासुर (नाद प्रतीक शंख) के द्वारा समुद्र (अतल गहराईयों में) में बन्दी होने से मुक्त कराने के आश्वासन के रूप में चाहा गया है। श्रीकृष्ण का उनके पुत्र को मुक्त कराने का आश्वासन वास्तव में ज्ञान को लोकव्याप्ति प्रदान करने के लिये किया गया आश्वासन है।

कुण्डेश्वर महादेव मन्दिर

ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु सांदीपनि से की गई वचनबद्धता ही श्रीकृष्ण को श्रीमद्भागवत गीता का उपदेश देने के लिये विवश करती है। इस दृष्टि से उज्जैन और गुरु सांदीपनि के गुरुकुल की महिमा को स्वीकार करना चाहिये। ऐसा वर्णन आता है कि श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई बलराम और मित्र सुदामा के साथ चौंसठ दिनों तक यहाँ रहकर चौंसठ कलाओं और चौदह विद्याओं को सीखा है।

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग को सिंहस्थ 2016 के दौरान अनेक महत्वपूर्ण स्थायी गतिविधियों को क्रियान्वित करने का दायित्व प्राप्त हुआ था, जिनमें से सांदीपनि आश्रम में कला दीर्घाओं का निर्माण एक है। अकादमी के आग्रह पर चौंसठ कलाओं और चौदह विद्याओं के शास्त्रीय आधार का संकलन और अनुवाद वरिष्ठ अध्येता डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने तथा इस पर आधारित चित्रांकन का कार्य उड़िया पट्ट लोकचित्र शैली के कुशल चित्रकार श्री आकाश महाराणा और उनके सहयोगियों ने किया है। अकादमी इनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। आशा है कि यह पुस्तक गुरु सांदीपनि, श्रीकृष्ण और उज्जैन के महात्म्य में उत्सुक पाठकों, शोधार्थियों के लिये उपयोगी होगी।

अशोक मिश्र
संपादक

महर्षि सान्दीपनि

पुरा काशीवासी कृतिसुकृतिसत्पूरुषवरः तपस्वी तेजस्वी धृतिमतिसुशीलादिवसतिः।
महोदारोऽपारोत्तमतलसत्पांडुरयशाः कुटुम्बी शैवेन्द्रो मुनिरिह ह सान्दीपनिरभूत्।।

प्राचीन काल में यहाँ सान्दीपनि मुनि हुए। वे काशी के निवासी थे। अपने सत्कर्मों के कारण वे सत्पुरुष, तपस्वी, तेजस्वी, धैर्यशाली, सुशील सम्पन्न, अत्यंत उदार, अपार उत्तम धवल कीर्ति वाले और गृहस्थ परम शैव थे।

कदाचिद्यात्रार्थंन्त्रिपुरमथनेच्छापरवशाः पुरीम्धन्याम्पुण्यां क्षितितलविभूषां सुरनुताम्।
अवन्तीञ्चन्तीं विलसति महे कुम्भसमये प्रसन्नस्वान्तोऽयं सुकृतरुचिभृत्सन्मतिरगात्।।

किसी समय शिवजी की इच्छा से पृथ्वी का आभूषण, देवताओं द्वारा नमस्कृत, पवित्र, धन्य और चमकदार अवन्तीपुरी में वे सत्कर्म में रुचि के कारण प्रसन्न मन से तब गये, जब वह कुम्भ उत्सव से सुशोभित हो रही थी।

जनानान्दौर्भाग्यात् सुचिरमभवत्तत्र महती करालानावृष्टिश्शरणमगुरेतं ननु जनाः।
ततस्तेषान्दुःखं विषमविषमन्दुस्सहमसौ विलोक्यार्द्रस्वान्तः प्रियमधुरवागित्थमवदत्।।

लोगों के दुर्भाग्य से वहाँ बहुत समय से भीषण अवर्षा की स्थिति थी। लोग मुनि सान्दीपनि की शरण में गये। तब उनके असहनीय अपार दुःख से द्रवित होकर वे मधुरवाणी से बोले।

अये लोकाश्शोकं नु कुरुत सुदुर्भिक्षभरतो दयालुश्रीशम्भुः कतिपयदिनैर्वोऽशिवमिदम्।
हरिष्यत्येवातः परमगतनूजापतिमुदे चकारासौ घोरम्प्रविजितमनास्सद्गुरुतपः।।

आप लोग चिन्ता न करें। कुछ ही दिनों में दयालु भगवान शिव की कृपा से यह अकाल सुकाल में बदल जाएगा। तब शिवजी की प्रसन्नता के लिए सान्दीपनि ने घोर तपस्या की।

महाकालाल्लिङ्गादथ सह तया प्रादुरभवद् ब्रवीति स्मायीशः प्रवरतपसन्तं मुनिवरम्।

तब महाकाल के लिंग से पार्वती के साथ शिवजी प्रकट हुए और प्रचण्ड तपस्या करते मुनि सान्दीपनि से उन्होंने कहा।
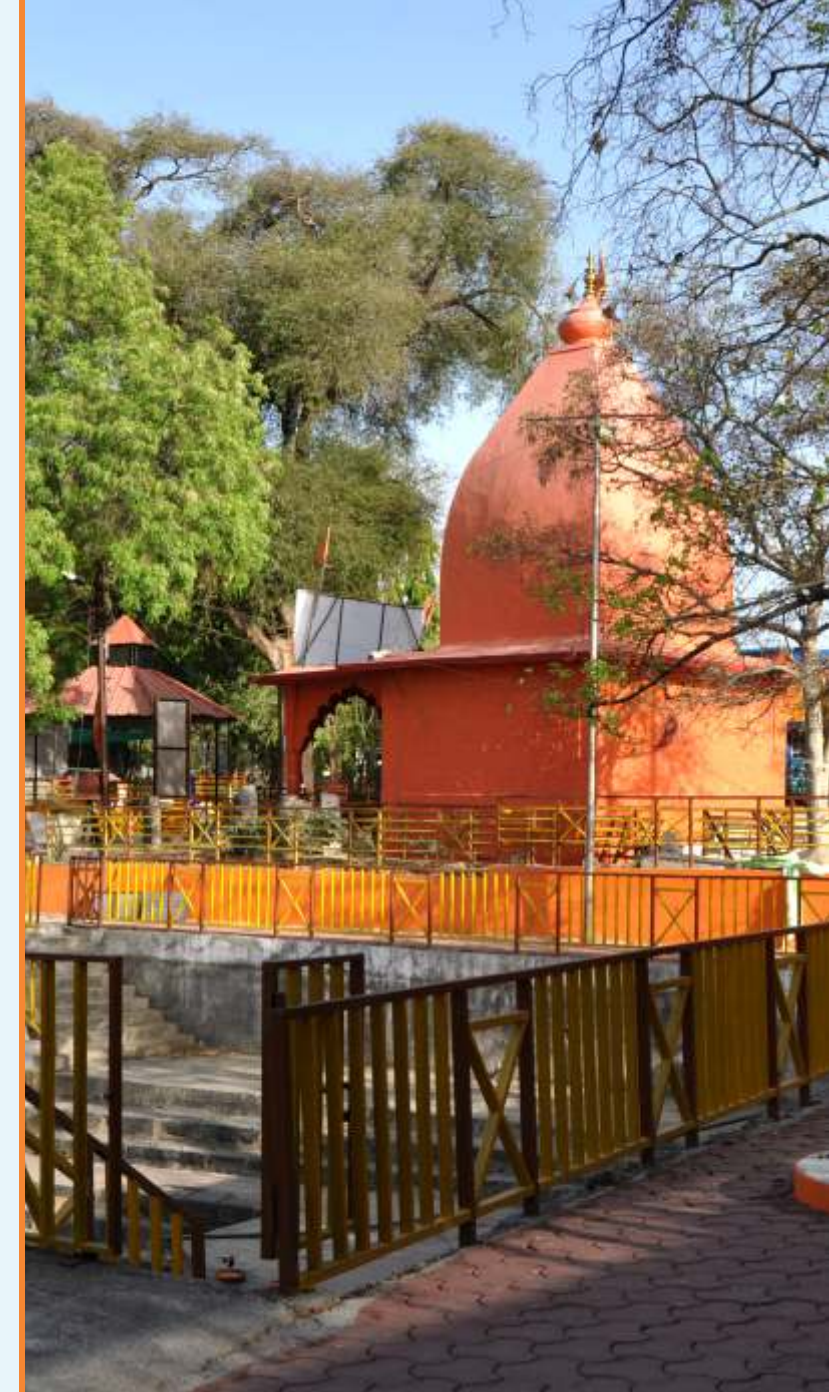
तपस्विंस्तेजस्विन्नतिदृढ़महोदारमनसः प्रयासंते दुष्ट्वा सकरुण मनस्कस्समभवम्।
तपः पूर्णञ्जातम्बुधवर तवैवैतदधुना वरं मां याच त्वं स्थिरतरमते स्वाभिलषितम्।।

हे तेजस्वी तपस्वी! अत्यंत दृढ़ और उदार मन का तुम्हारा प्रयत्न देखकर मेरा मन दया से भर गया। हे विद्वान्! तुम्हारी तपस्या पूरी हो गयी। अब तुम जो चाहो सो वरदान माँग लो।

वचः श्रुत्वा शम्भोर्भृशमुदितचेता मुनिवरो मुदा प्रोवाचेशं शिव जगदिदं पाहि कृपया।
हर त्वं दुर्भिक्षं सफलय मदीयं तप इदं जनान् दुर्भिक्षार्त्तान् कुरु च सुखिनस्सत्वरमिमाम्।।

शम्भु की बात सुनकर मुनि प्रसन्न होकर बोले– हे शिव! दया करके इस जगत की रक्षा कीजिए। अकाल दूर कर दो। मेरी यह तपस्या सफल कर दो। अकाल पीड़ित इन लोगों को शीघ्र सुखी कर दो।

इमां श्रुत्वा वाणीमुपकृतिपरामर्थरुचिरां समानं मानाहम्पुरिपुरिमम्भक्तमवदत्।
कदाप्यस्यां पुर्यां न हि भवति दुर्भिक्षजनिता मनागप्यार्तिर्न्नोरुगपि सुतरां कायमनसोः।।

परोपकार से पूर्ण यह वाणी सुनकर शिवजी भक्त सान्दीपनि से बोले–इस नगरी में अकाल के कारण कभी किसी की काया या मन को बिल्कुल भी कष्ट नहीं होगा।

अथायन्देशो मालव इतिपरां ख्यातिमयतां भवन्तु श्रीमन्तस्तव कुलभुवो मालवभवाः।
त्वमप्यत्रैवातः परमविशमत्यन्तमुदितो मदर्चासंरक्तो निजजनसमेतो वस सदा।।

यह देश मालव नाम से प्रसिद्ध हो। तेरे कुल के वंशज श्री–सम्पन्न मालव होंगे। इसलिए तुम भी अपने स्वजनों के साथ मेरी आस्था सहित यहीं बस जाओ।

बलः कृष्णश्छात्रौ तव च वसुदेवात्मजवरौ मृतम्पुत्रन्तुभ्यं गतयमभयं दापत उत।
मुनिं प्रीत्योक्त्वैवं सगिरिवरजः श्रीपशुपतिः जगामन्तर्धानं स मुनिरपि जातोऽतिमुदितः।।

वसुदेव के पुत्र बलराम और कृष्ण तुम्हारे छात्र बनेंगे। वे तुम्हारे मृत पुत्र को लाकर देंगे। मुनि से प्रेमपूर्वक यह कहकर पार्वती सहित पशुपति अन्तर्ध्यान हो गये। मुनि भी बहुत प्रसन्न हुए।

मुनेः प्रभावादुपवर्तनन्तत्सुभिक्षतो हृष्टतरं बभूव।
सर्वेऽसुमन्तोप्यभवल्लसन्तो विभूतिमन्तो ननु मालवीयाः।।

मुनि के प्रभाव से सुकाल हो जाने से मालवा के सब लोग अत्यंत प्रसन्न हुए। सब मालवी लोग श्री–सम्पन्न हो गये।

सर्वे देशा भूषिता मालवीयैस्सर्वे विज्ञा भूषिता मालवीयैः।
सर्वे धर्म्मा आश्रिता मालवीयैः सर्वा विद्या आश्रिता मालवीयैः।।

सब देश मालवियों से सुशोभित है, समस्त विशेषज्ञ मालवियों से अलंकृत है, सभी धर्म मालवियों द्वारा आश्रित है और सब विद्याएँ मालवियों से आश्रय पाती हैं।

स सान्दीपनिर्विद्वदिन्द्रः कुटुम्बीगतस्तीर्थवर्यम्प्रभासं कदाचित्।
विधेः प्रातिकूल्यात्समुद्रेऽथ तत्र प्रियः पुत्र एतस्य सम्मज्जति स्म।।

विद्वानों में प्रमुख सान्दीपनि सकुटुम्ब प्रधान तीर्थ प्रभास कभी गये थे। दुर्भाग्य से वहाँ उनका प्रिय पुत्र डूब गया।

अथो द्वारकातः कदाचित्सुदैवादवन्ती यदोर्वंशकेतू मिलित्वा।
महोच्चप्रभावौ ततोऽध्येतुकामौ गतौ वासुदेवावुभौ रामकृष्णौ।।

द्वारका से लौटने पर यदुवंश में श्रेष्ठ, अत्यन्त उच्च प्रभाव सम्पन्न बलराम और कृष्ण अध्ययन के लिए उज्जैन में सान्दीपनि के पास आये।

मासैरेव ततश्च तौ कतिपयैस्सान्दीपनेः सद्गुरोस्, सर्वं वाङ्मयमेत्य सादरभरं सम्प्रार्थयामासतुः।
किंचित्त्वं गुरुदक्षिणार्थमधुना ब्रूहि प्रभो सम्प्रति, श्रुत्वा तद्वचनं भृशं वनितया संमंत्र्य सोप्यब्रवीत्।।

उन दोनों ने सान्दीपनि सद्गुरु से कुछ माह में ही समस्त विद्या प्राप्त कर आदर सहित प्रार्थना की– हे गुरुदेव! अब आप दक्षिणा के लिए कुछ कहिए। तब सान्दीपनि ने पत्नी से विचार विमर्श करके कहा।
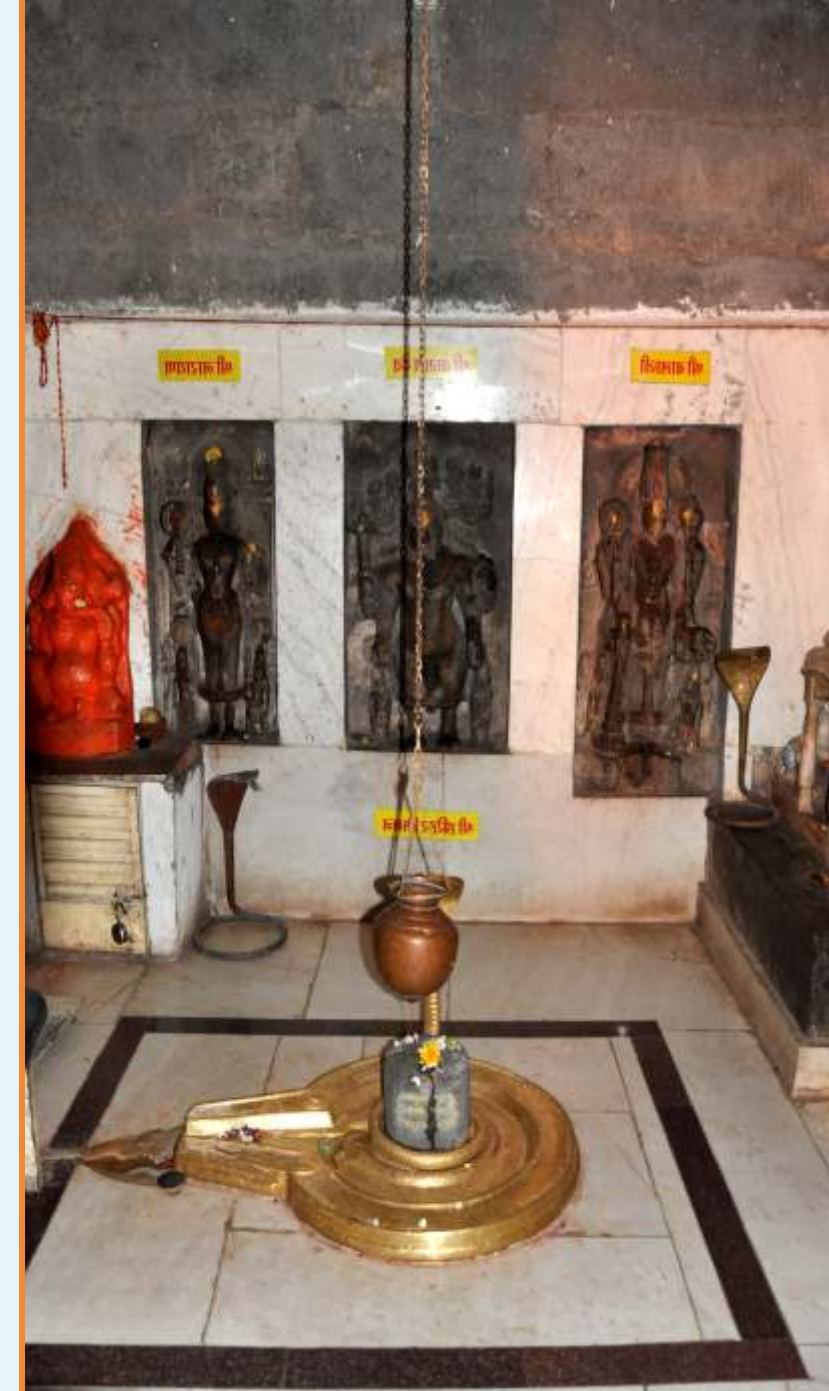
प्रभासे हृतः सिन्धुना मे तनूजः समामेतु पुत्रौ गुरोर्दक्षिणेयम्।
समाकर्ण्य वाणीमिमां श्रीगुरोस्तौ तथेति प्रमोदाद् ग्रहीत्वा गतौ तम्।।

प्रभास में समुद्र ने मेरे पुत्र का हरण कर लिया, उसे ले आओ। यही गुरु दक्षिणा है। गुरु की बात स्वीकार करके वे दोनों प्रसन्नता पूर्वक चले गये।

गृहीत्वा ततस्सादरम्बालमेतम् पुरीं तां समागत्य तस्मै ददौ सः।
गुरोराज्ञया किन्न कुर्वन्ति सन्तो महान्तोऽतिविज्ञाः कृतज्ञानुशिष्याः।।

उस बालक को प्रभास से उज्जैन लाकर गुरु सान्दीपनि को सौंप दिया। कृतज्ञ शिष्य गुरु की समस्त आज्ञाओं का पालन करते हैं।

अवाप्य पुत्रं सधनं गुरुस्तावाशीर्वचोभिर्मुदितौ चकार।
श्रीरामकृष्णावपि कीर्तिवित्तौ प्रसन्नचित्तौ ययतुः पुरीं स्वाम्।।

धन सहित अपने पुत्र को पाकर गुरु सान्दीपनि ने आशीर्वाद दिया। तब श्रीकृष्ण और बलराम प्रसन्न होकर कीर्ति पाते हुए मथुरा चले गये।

सान्दीपनिश्च ब्रह्मांशो योगिनां ज्ञानिनां गुरुः। गायत्रीं च ददौ ताभ्यां मुनिः सान्दीपनिस्तदा।।

ब्रह्म के अंश सान्दीपनि योगियों और ज्ञानियों के गुरु थे। उन्होंने उपनयन के समय कृष्ण-बलराम को गायत्री मंत्र दिया। श्रीकृष्ण -बलराम के उपनयन संस्कार के समय सान्दीपनि भी मथुरा में उपस्थित थे।

अत्रैव चागता ब्रह्मन् गोमती सरितां वरा।

हे गुरुवर! श्रेष्ठ गोमती अब यहीं उज्जैन में आ गयी है। स्नान के लिए अब दूर यात्रा नहीं करनी पड़ेगी।

अथो गुरुकुले वासमिच्छन्तावुपजग्मतुः।
काश्यं सान्दीपनिं नाम ह्वन्तिपुरवासिनम्।।

गुरुकुल में निवास की इच्छा से वे श्रीकृष्ण-बलराम काशी के सान्दीपनि के पास गये, जो अवन्तीपुर में निवास करते हैं।

अथोपसाद्य तौ दान्तौ गुरौ व्रत्तिमनिन्दिताम्।
ग्राहयन्तावुपेतौ स्म भक्त्यादेवमिदृतौ।।

वे दोनों सरल और उदार प्रशंसनीय शिष्य का रूप धरकर गुरु के पास उसी प्रकार पहुँचे जैसे भक्त देव के पास।

तयोर्द्विजवरस्तुष्टः शुद्धभावानुवृत्तिभिः।
प्रोवाच वेदानखिलान्सांगोपनिषदो गुरुः।।

श्रेष्ठ द्विज गुरु ने प्रसन्न होकर उन दोनों को समस्त षडंग सहित वेद और उपनिषदों का उपदेश दिया।

सरहस्यं धनुर्वेदं धर्मान् न्यायपथांस्तथा।
तथा चान्वीक्षिकीं विद्यां राजनीतिं च षड्विधाम्।।

रहस्य सहित धनुर्वेद, धर्मशास्त्र, न्यायशास्त्र, नीतिशास्त्र, छहों प्रकार की राजनीति का ज्ञान दिया।

सर्वं नरवर श्रेष्ठौ सर्वविद्याप्रवर्तकौ।
सकृतन्निगदमात्रेण तौ संजगृहतुर्नृप।।

समस्त विद्या का आरम्भ करने वाले श्रीकृष्ण-बलराम ने वे समस्त विद्याएँ एक बार कहने मात्र से ग्रहण कर लीं।

अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या संयत्तौ तावतीः कलाः।

सब विद्या और चौसठ कला उन्होंने चौसठ दिनों में सीख लीं।

ईश्वरसंहिता, अध्याय पैंतीस
श्रीमद्भागवत, स्कन्ध दस, अध्याय पैंतालीस
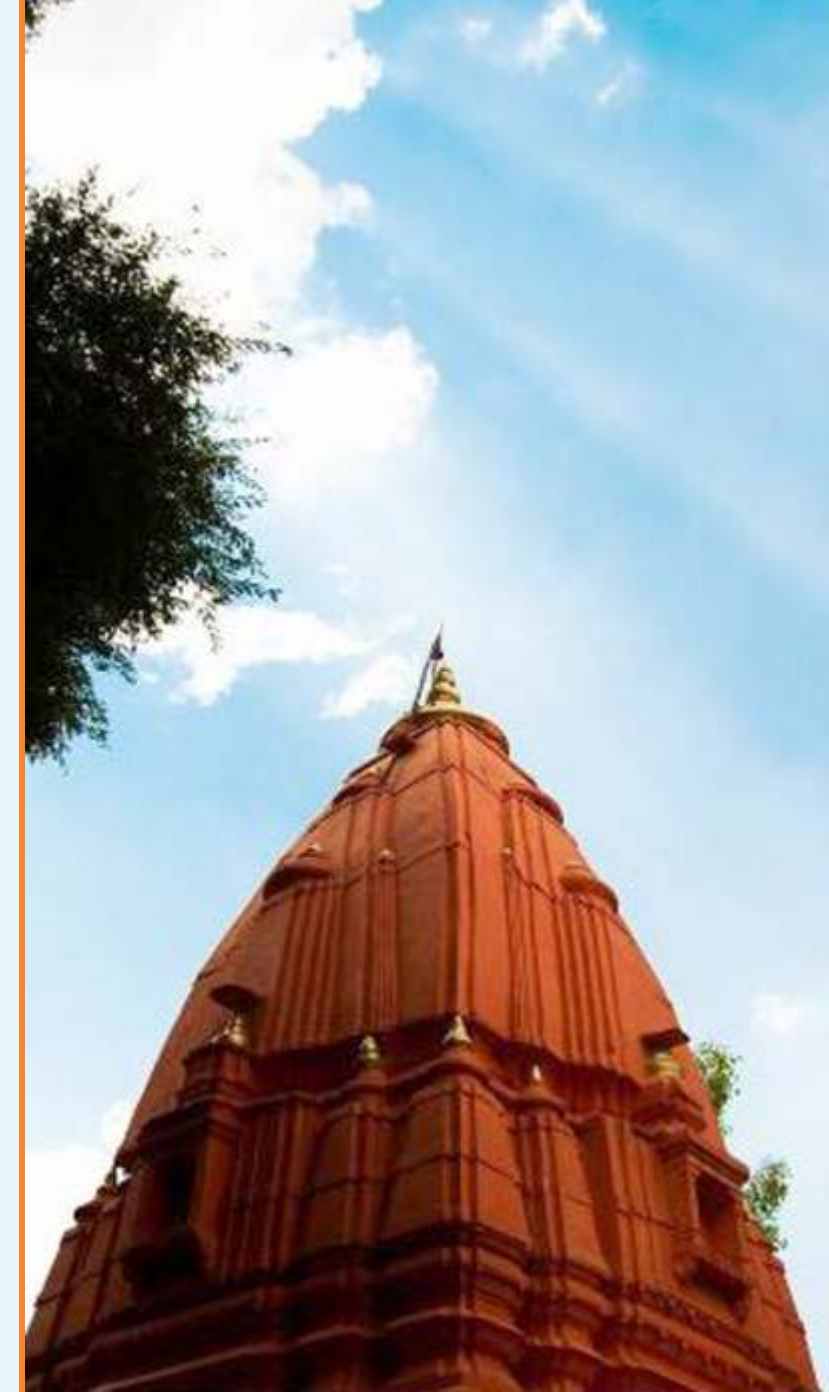
श्रीकृष्ण द्वारा सीखी गई

चौदह विद्याएँ

ऋग्वेद

(क) इन्द्र सर्वप्रधान देवता– एक हजार अट्ठाइस मंत्रों में वर्णित मनुष्य जैसे जबड़े–दाढ़ी। बिजली गिराती वज्र जैसी भुजाएँ। अंकुशधारी, पक्के मकान में निवास, हरे घोड़े वाले सुनहले रथ पर चढ़ता। इन्द्राणी पत्नी। अग्नि, पूषा भाई। वृत्तासुर पर प्रहार करता। यह रष्ट्रीय देवता।

(ख) अग्नि– दो सौ मंत्रों में वर्णित। यज्ञाग्नि में सम्बन्ध। घृत का पृष्ठ, ज्वाला के केश, लाल दाढ़ी–मूँछ, तीखी दाढ़ें, सुनहले दाँत, जीभ से हवि खाता। जलती ज्वाला के सिर से सर्वत्र विचरण करता। आरम्भ में बाल वत्स के समान। घोड़े के समान यह हवि को देवताओं तक पहुँचाता। घी–लकड़ी भोजन। पिघला मक्खन पेय, दिन में तीन बार खाता। लपटें चम्मच हैं। सोमरस का पान। रात में घने अंधेरे को भगाता। मार्ग इसका काला। जंगल जलाता। इसका धुआँ आकाश थामते खंभे जैसा। सोने जैसा चमकता रथ। दो या अधिक लाल घोड़े खींचते। सान्दीपनि मुनि, श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा जलती अग्नि को हाथ जोड़े नमन करते हैं अथवा इन्द्र को प्रणाम करते हैं।

यजुर्वेद

यज्ञ प्रधान। पंख फैलाये पक्षी जैसी वेदी।
सान्दीपनि मुनि, श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा को यज्ञ कराते हुए।
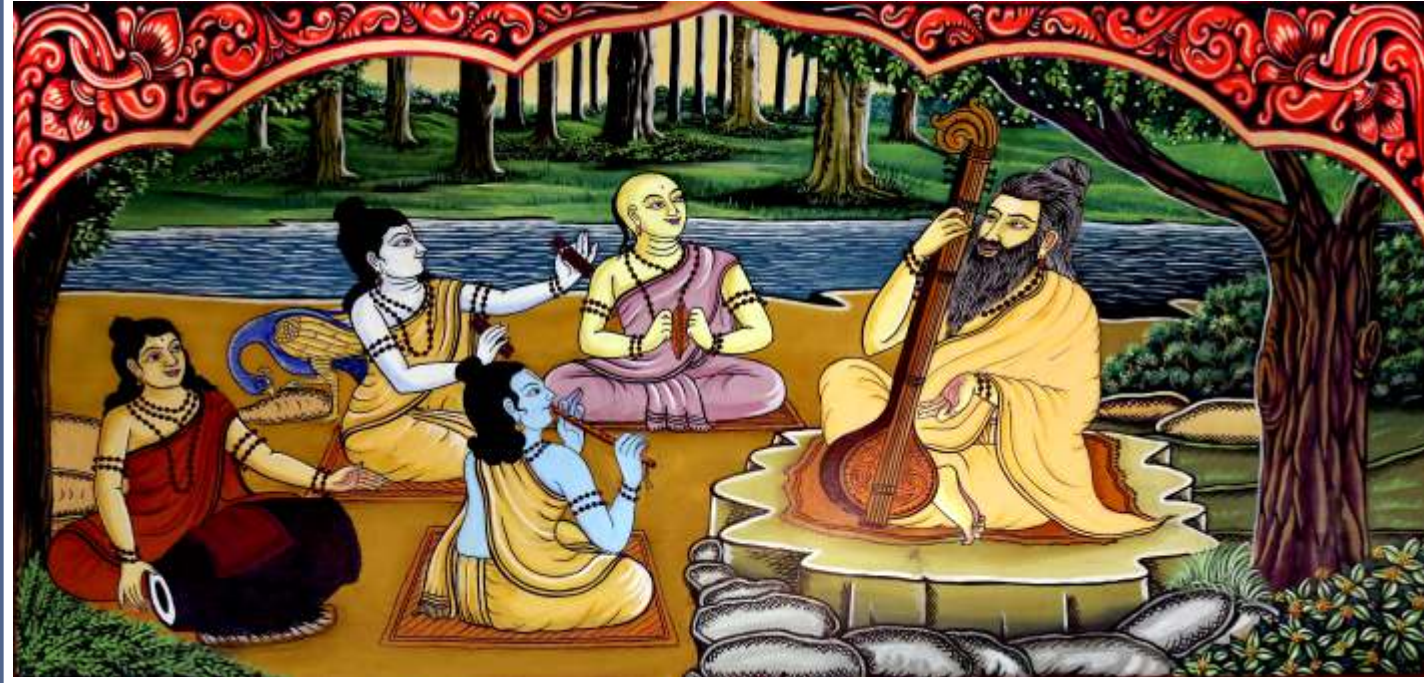
सामवेद

सान्दीपनि, श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा को
सा... रे... ग... म... प... ध... नि... स्वरों का अभ्यास कराते हुए।

अथर्ववेद

सान्दीपनि, श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा को जड़ी-बूटियाँ तोड़ते,
रस बनाते, खरल बत्ते से पीसते, रोगी के शरीर पर लगाते, दवाई पिलाते हुए।

शिक्षा

सान्दीपनि, श्रीकृष्ण को वर्ण उच्चारण के स्थान
गला, नाक, मुँह आदि उँगली से बताते हुए।

छन्द

सान्दीपनि, श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा के सामने भूमि की मिट्टी
पर लघु (।)गुरु (ऽ) के निशान बनाकर समझाने की मुद्रा में।

व्याकरण

श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा देख रहे हैं, उच्चारण करते हुए सान्दीपनि को।
सान्दीपनि के मुख से निकलते अ.. इ.. उ.. ण्.. (माहेश्वर सूत्र)।

निरुक्त

आकाश, अन्तरिक्ष देवों- जल, अग्नि, पवन-सूर्य आदि एक के ऊपर
एक बनाकर उन्हें दिखाते हुए सान्दीपनि।

ज्योतिष

नवग्रह, तारों को एक हाथ से दिखाते और दूसरे हाथ से गिनते हुए सान्दीपनि।
एक खड़ी खूँटी की छाया नापते श्रीकृष्ण।
कृष्ण, बलराम देख रहे हैं गुरु सान्दीपनि और अपनी छाया को।

धर्मशास्त्र

सान्दीपनि अंगुली उठाकर श्रीकृष्ण, सुदामा, बलराम को
मानव धर्मशास्त्र (मनुस्मृति) का उपदेश दे रहे।
सामने लिखा है– मानव धर्मशास्त्र।
बता रहे चार आश्रम– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

कल्प

सान्दीपनि यज्ञवेदी बना रहे। सुदामा ईंट दे रहे।
बलराम लकड़ियाँ वेदी में जमा रहे।
श्रीकृष्ण सुआ और घी का बर्तन लेकर आ रहे।

पुराण

सान्दीपनि के सामने पत्राकार पोथी है।
उस पर लिखा है– पुराण। उनके हाथ में एक पत्ता है,
जिसे वे पढ़कर कथा कहने की मुद्रा में।
श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा ध्यान से उन्हें प्रसन्न मुद्रा में चकित देखते हुए।

मीमांसा

सान्दीपनि वेद पाठ करते अंगुली से निर्देश देते हैं।
तर्जनी अंगुली उठी हुई है। श्रीकृष्ण, सुदामा, बलराम
सावधानी से सुन रहे हैं। सामने लिखा है– मीमांसा करते हुए।

तर्क

श्रीकृष्ण प्रश्न करने की मुद्रा में। सान्दीपनि उत्तर देने की मुद्रा में।
सुदामा, श्रीकृष्ण को प्रसन्नता पूर्वक देख रहे हैं।
बलराम सान्दीपनि को गम्भीरता से देख रहे हैं।
सामने लिखा है– तर्क (न्याय शास्त्र)।

श्रीकृष्ण द्वारा सीखी गई

चौंसठ कलाएँ

॥१॥ **गीत**

स्वरगं पदगं चैव तथा लयगमेव च।
चेतोवधानगं चैव गेयं ज्ञेयं चतुर्विधम्॥

गाना चार प्रकार का होता है। स्वर, पद, शब्द, लय
और चित्त अवधान या ध्यान उसके केन्द्र में हैं।

॥२॥ **वाद्य**

घनं च विततं वाद्यं ततं सुषिरमेव च।
कांस्यपुष्करतन्त्रीभिर्वेणुना च यथाक्रमम्॥

घन, वितत, सुषिर, कांस्य, पुष्कर, तन्त्री (तार वाली वीणादि), वेणु (वंशी) आदि वाद्य।
चमड़े के, तार वाले, झांझ आदि पीटकर बजने वाले वाद्य होते हैं।

॥३॥ **नृत्य**

करणान्यंगहाराश्च विभावो भाव एव च।
अनुभावो रसाश्चेति संक्षेपान्नृत्यसंग्रहः।।

करण, अंगहार, विभाव, भाव, अनुभाव,
रस आदि के संयोग से नृत्य होता है।

॥४॥ **आलेख्य**

रूपभेदाः प्रमाणानि भावलावण्ययोजनम्।
सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम्।।
एतानि परानुरागजननान्यात्मविनोदार्थानि च।।

इन छः अंगों से चित्र बनता है– रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य का संयोजन,
समानता और कूची की भंगिमा। इनसे मनोविनोद होता है
और अन्य के प्रति या उसका अनुराग भी उत्पन्न होता है।

||५||

विशेषकच्छेद्य

विशेषकस्तिलको यो ललाटे दीयते, तस्य भूर्जादिपत्रमयस्यानेकप्रकारं छेदनं छेद्यम्।
पत्रच्छेद्यमिति वक्तण्यम्। वक्ष्यति च पत्रच्छेद्यानि नासाभिप्रायाकृतीनि प्रेषयेत्।
विशेषकग्रहणमादरार्थम्। विलासिनीनामतिप्रियत्वात्।

विशेषक नामक तिलक ललाट पर लगाते हैं। भोजपत्र आदि पत्तों
पर उसे अनेक प्रकार से काटते हैं। इसलिए यह पत्रच्छेद्य भी कहलाता है।
नाक जैसी आकृति के भी पत्रच्छेद्य बनते रहे। आदर प्रकट करने के लिए विशेषक कहते हैं।
क्योंकि यह विलासिनियों का अत्यन्त प्रिय होता है।

||६||

तंडुलकुसुम वलिविकार

अखण्डतण्डुलैनानावर्णैः सरस्वतीभवने कामभवने व मणिकुट्टिमेषु भक्तिविकाराः।
तथा कुसुमैर्नानावर्णैर्ग्रथितैः शिवलिंगादिपूजार्थं भक्तिविकाराः।

विभिन्न रंगों के बिना टूटे चावल से सरस्वती भवन या काम भवन की
मणियों से बनी फर्श पर विभिन्न भाँत (डिजाइन) बनाना।
रंग-बिरंगे गूँथे फूलों से शिवलिंग आदि और पूजा के लिए अनेक प्रकार की भाँतें बनाना।

॥७॥

पुष्पास्तरण

नानावर्णैः पुष्पैः सूचीनानादिबद्धैरभ्यस्यते।
तदेव वासगृहोपस्थानमण्डपादिषु यस्य पुष्पशयनमित्यपरा संज्ञा।

रंग–बिरंगे फूलों को सुई आदि से क्रमबद्ध करने का अभ्यास,
इसका एक और नाम पुष्पशयन भी है,
जो निवास घर के पूजास्थान या मंडप आदि में होता है।

॥८॥

दशनवसनांगराग

अंगरागोऽङ्गमार्ष्टिः कुंकुमादिना।
रंजनविधिरिति विलासिनीनां दशनादिसंस्कारस्मत्यन्ताभीष्टत्वात्।

कुमकुम आदि रंग लगाना अंगराग है।
युवतियों को दाँत आदि रंगना प्रिय रहा है।
दाँत, वस्त्र और अंगों को रंगा जाता है।

॥९॥ मणिभूमिका कर्म

मणिभूमिका कृतकुट्टिमा भूमिः, ग्रीष्मे शयनापानकार्थं तस्यां मरकतादिभेदेन करणम्।

कृत्रिम फर्श को मणिभूमिका कहते हैं।
गर्मी के मौसम में सोने, पीने के लिए मरकत (पन्ना) आदि रत्नों से उसे बनाना।

॥१०॥ शयन रचना

शयनीयस्य कालापेक्षया रक्तविरक्तमध्यस्थाभिप्रायादाहार परिणतिवशाच्च रचनम्।

अवसर के अनुसार समय और मौसम की अपेक्षानुसार
रागी-विरागी या सामान्य के प्रयोजन से आहार
परिणाम के वश में होकर बिछौना बिछाना।

॥ ११ ॥

उदकवाद्य

उदके मुरजादिवद् वाद्यम्।

जल पर मृदंग या ढोल जैसा बजाना। जलतरंगादि।

॥ १२ ॥

उदकाघात

हस्तयन्त्रमुक्तैरुदकैस्ताडनम्। तदुभयं जलक्रीडांगम्।

हाथ की पिचकारी से पानी छोड़ना या
पानी से मारना, दोनों जलक्रीड़ा हैं।

॥ १३ ॥ **चित्राश्च योगा**

नाना प्रकार दौर्भाग्यैकेन्द्रियपलीतीकरणादयः।
ईर्ष्यया परातिसन्धानार्थाः तानौपनिषदिके वक्ष्यति।।

विभिन्न प्रकार के दुर्भाग्य में एक इन्द्रिय का सफेद (कर बूढ़ा)
करना आदि ईर्ष्या से शत्रु को लक्ष्य कर क्रिया करना है।

॥ १४ ॥ **माल्यग्रथन**

माल्यानां मुण्डमालादीनां देवतापूजनार्थं नेपथ्यानां ग्रन्थनविकल्पाः।

माला, सिर की मालाएँ देवता पूजन के
लिए साज-सिंगार गूँथने के विविध प्रकार।

॥१५॥

शेखरकापीडयोजन

शेखरकस्य शिखास्थानेऽवलम्बनन्यासेन परिधापनात्।
आपीड़स्य मण्डलाकारेण ग्रथितस्य परिधापनात्।
नानावर्णैः पुष्पैर्विरचनं योजनम्। नागरकस्य प्रधानं नेपथ्यांगम्।

सिर की शिखास्थान पर पहनने के कारण शेखर कहलाता है।
उसे गोल बनाकर पहनते हैं। रंग-बिरंगे फूलों से बनाते हैं।
नगर के नागरिकों का यह प्रमुख शृँगार है।

॥१६॥

नेपथ्य प्रयोग

देशकालापेक्षया वस्त्रमाल्याभरणादिभिः शोभार्थं शरीरस्य मण्डनाकाराः।

देशकाल की अपेक्षानुसार वस्त्र, माला,
आभूषणादि शरीर की सजावट है।

॥१७॥ **कर्णपत्रभंग**

दन्तशंखादिभि: कर्णपत्रविशेषा नेपथ्यार्था:।

हाथी दाँत, शंख आदि द्वारा कानों की पपड़ी सजाना।

॥१८॥ **गन्धयुक्ति**

स्वशास्त्रविहितप्रपंचा प्रतीतप्रयोजनैव।

सुगन्ध-शास्त्र के अनुसार विभिन्न गंध बनाना।

॥ १९ ॥

भूषणयोजन

अलंकारयोगः। स द्विविधः संयोज्योऽसंयोज्यश्च। तत्र संयोज्यस्य कण्ठिकेन्द्रच्छन्दादेर्मणिमुक्ताप्रवालादिभिः योजनम्।
असंयोज्यस्य कटककुण्डलादेर्विरचनं योजनम्। तदुभयं नेपथ्यांगम्। न तु शरीरे भूषणयोजनम्। तस्य नेपथ्यप्रयोगा इत्यनेनैव सिद्धत्वात्।

अलंकार योग दो प्रकार का होता है– एक संयोजन वाला और
दूसरा बिना संयोजन का। संयोजन कण्ठी के बीच छन्द आदि में मणि,
मोती, मूँगे आदि लगाना। बिना संयोजन वाले कड़ा, कुण्डल आदि बनाना।
वे दोनों सजावट के अंग हैं। शरीर का आभूषण पहनना नेपथ्य का अंग है।

॥ २० ॥

ऐन्द्रजाल

इन्द्रजालादिशास्त्रप्रभवा योगाः।
सैन्य- देवालयादिदर्शनादहंभावविस्मापनार्थाः।

इन्द्रजाल (जादूगर) शास्त्र से उत्पन्न योग है।
सेना, मंदिर आदि दिखाकर भुलावे में डालने के लिए होते हैं ये।

॥२१॥

कौचुमार

कौचुमारस्यैते सुभगंकरणादयः उपायान्तरासिद्धसाधनार्थाः।

कुचुमार तंत्र के अनुसार सौन्दर्यवृद्धि के प्रयोग।

॥२२॥

हस्तलाघव

सर्व कर्मसु लघुहस्तता कालातिपातनिरासार्थम्।
द्रव्यहानिषु वा लाघवं क्रीडार्थं विस्मापनार्थम् च।।

समस्त कामों में कर्म की शीघ्रता जिससे समय अधिक न लगे और लोगों को चकित करने के लिए हाथ की सफाई।

॥२३॥ विचित्रशाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया

विचित्रशाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया।

भिन्न-भिन्न प्रकार से साग-सब्जी, रस, भोजन बनाने की कला।

॥२४॥ पानकरस-रागासवयोजन

भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-पेयमिति चतुर्विधआहाराः। तेषां निर्माणविधिः।

दाँतों से काट कर खाना, खाना, चाटना, पीना- ये चार प्रकार के आहार हैं।
उनमें भी पना, रस आदि सहित भोजन बनाने की विधि।

॥२५॥

सूचीवानकर्म

सूच्या सन्धानकरणम्।
सीवनं, ऊतनं, विरचनम्।।

सुई से सीना, नये वस्त्र सीना, फटे वस्त्र सीकर जोड़ना, बिछौने सीना आदि।

॥२६॥

सूत्रक्रीड़ा

नालिकासंचारनालादिसूत्राणामन्यथान्यथा दर्शनम्।
छित्त्वा दग्ध्वा च पुनरच्छित्वा दर्शनम् तच्चांगुलिन्यासात्।

हाथ के सूत से मन्दिरादि विभिन्न रूप बनाना।

॥२७॥ **वीणाडमरूकवाद्यानि**

वीणाडमरूकादिवादित्रैः अक्षराणि स्पष्टान्युच्चार्यमाणानि श्रूयन्ते।

वीणा, डमरू आदि वाद्यों को ऐसे बजाना कि अक्षर स्पष्ट उनसे सुनाई दें।

॥२८॥ **प्रहेलिका**

लोकप्रतीता क्रीड़ार्था वादार्था च।

पहेली कहना और उसका अर्थ बताना।

॥२९॥ **प्रतिमाला**

अन्त्याक्षरिकेति प्रतीतिः।
प्रतिश्लोकं क्रमाद्यत्र संधायाक्षरमन्तिमम्।
पठेतां श्लोकमन्योन्यं प्रतिमालेति सोच्यते।।

अन्त्याक्षरी–स्पर्धा की कुशलता।

॥३०॥ **दुर्वाचकयोग**

शब्दतोऽर्थतश्च दुःखेनोच्यत इति दुर्वाचकम्।

जिनका शब्द–अर्थ के अनुसार उच्चारण कठिन हो। वह दुर्वाचक योग है।

॥ ३१ ॥

पुस्तकवाचन

भरतादिकाव्यानां पुस्तकस्थानां शृँगारादिरसापेक्षया गीततः स्वरेण वाचनम्।
अनुरागजननार्थमात्मविनोदार्थम् च।।

रस के अनुसार गीत और स्वर में आकर्षण उत्पन्न करने
और आत्मविनोद के लिए पुस्तकों का वाचन।

॥ ३२ ॥
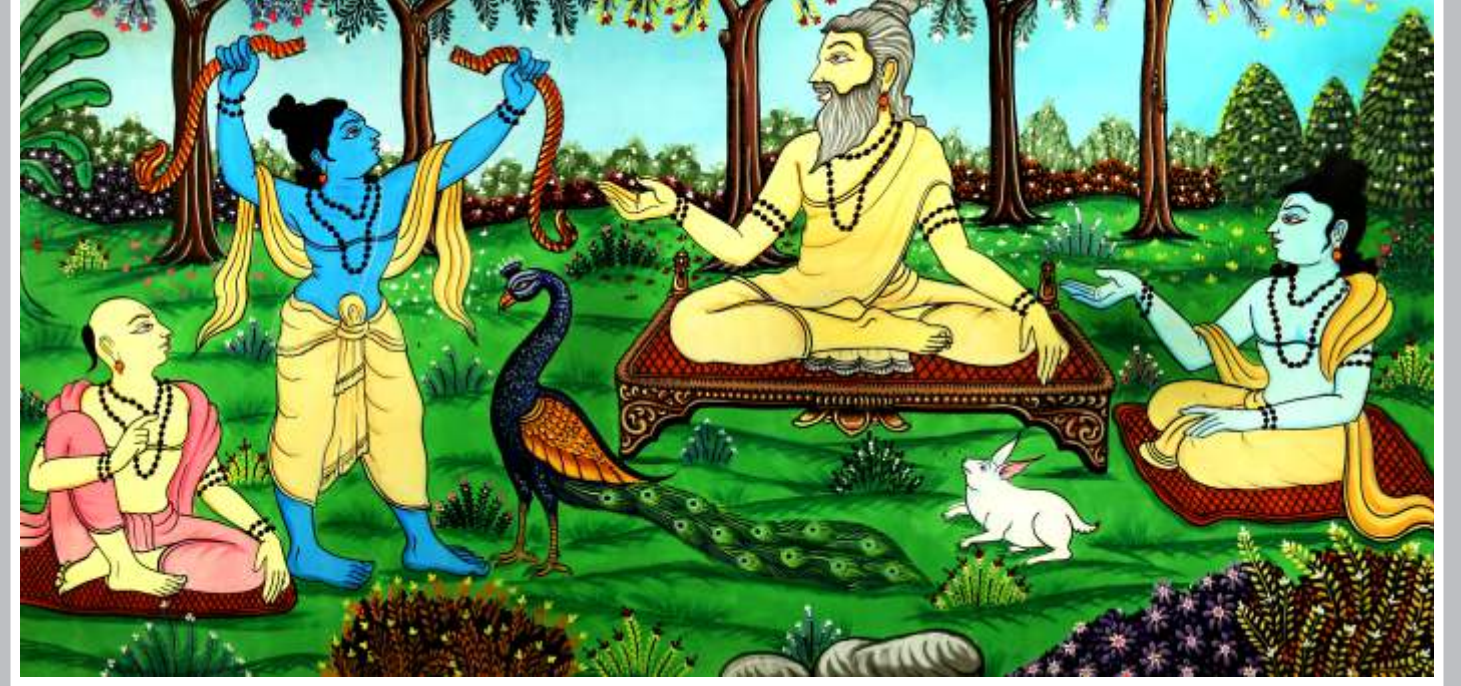
नाटकाख्यायिकादर्शन

काव्येषु गद्यपद्येषु नाटकस्य आख्यायिकायाश्च प्रधानगद्यत्वाद्दर्शनं परिज्ञानमिति।

काव्य, नाटक, आख्यायिकादि गद्य-पद्य विधाओं का ज्ञान।

॥३३॥ काव्यसमस्यापूरण

काव्यस्य श्लोकस्य समस्या पादस्य पूरणम्।
क्रीड़ार्थं वादार्थं च।

काव्य या छन्द के चरण पूरे करना।
क्रीड़ा या वाद-विवाद प्रयोजन हो सकता है।

॥३४॥ पट्टिकावेत्रवानविकल्प

खट्वाया आसनस्य च वेत्रैर्वानविकल्पाः प्रतीतार्थाः।

खाट और आसन की बेंत द्वारा विभिन्न प्रकार की बुनाई।

॥ ३५ ॥ **तक्षकर्म**

कुन्दकर्माण्यपद्रव्यार्थानि।

बर्तनों और गहनों पर मीनाकारी।

॥ ३६ ॥ **तक्षण**

वर्धकिकर्म शयनासनाद्यर्थम्।

लकड़ी की कला हेतु बढ़ई का काम।

॥३७॥

वास्तुविद्या

गृहकर्मोपयोगिनी।

घर बनाना आदि कला।

॥३८॥

रूप्यरत्नपरीक्षा

रूप्यमाहतद्रव्यं दीनारादि, रत्नं वज्रमणिमुक्तादि, तेषां गुण-दोष-मूल्यादिभिः परीक्षा व्यवहारांगम्।

धातु, रत्न के गुण–दोष और मूल्य की परीक्षा।

॥३९॥ **धातुवाद**

मृत्प्रस्तररत्नधातूनां पातनशोधनमेलनादिज्ञानम्।

मिट्टी, पत्थर, रत्न, धातुओं को मिलाना, संशोधन करना आदि।

॥४०॥ **मणिरागाकरज्ञान**

स्फटिक्मणीनां रंजनविज्ञानमर्थार्थं भूषणार्थं च।
पद्मरागादिमणीनामुत्पत्तिस्थान ज्ञानपर्थार्थम्।।

स्फटिक आदि मणियों को धन और आभूषण के लिए रंगने का विज्ञान।
पद्मराग (लाल मणि) आदि के उत्पत्ति का (धन के लिए) ज्ञान।

॥४१॥

वृक्षायुर्वेद योग

रोपण-पुष्टि-चिकित्सा वैचिच्यकृतो रहोद्यानार्थाः।

गृहोद्यान के लिए रोपना, पालन-पोषाण करना,
चिकित्सा में विचित्रता लाने की दक्षता।

॥४२॥

मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधि

सजीवद्यूतविधानमेतत्।
तत्रोपस्थानादिभिश्चतुरंगैर्युद्धविधानं क्रीड़ार्थं वादार्थम्।

भेड़, मुर्गे, शावकों को खेल या प्रतिस्पर्धा के लिए लड़ाना।

॥४३॥

शुकसारिका प्रलापन

शुकसारिका हि मानुषभाषया प्रलापिताः सुभाषितं पठन्ति संदेशं च कथयन्ति।

तोता-मैना को मनुष्य की भाषा में बोलना सिखाना।
सुभाषित पढ़ते या सन्देश कहते।

॥४४॥

उत्सादन-संवाहन-केशमर्दन कुशलता

पादाभ्यां यन्मर्दनं तदुत्सादनम्।
हस्ताभ्यां याच्छिरोऽभ्यंगकर्म तत्केशमर्दनम्।
अंगेषु मर्दनं संवाहनम्।

पैरों से मालिश, हाथों से शरीर और बालों की मालिश में कुशलता।
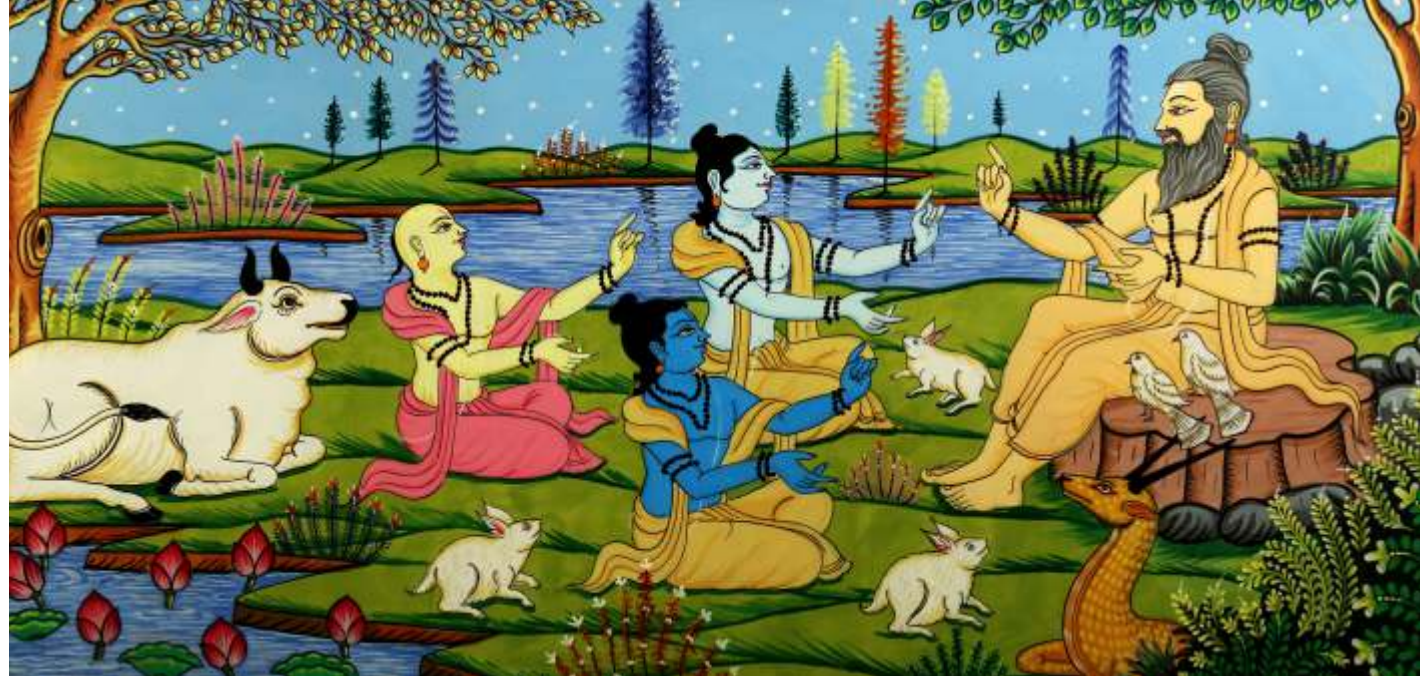
॥४५॥

अक्षरमुष्टिका कथन

अक्षराणां मुष्टिरिव गुप्तिः।
गूढ़वस्तुमन्त्रणार्थम्।

सांकेतिक अक्षरों के अर्थ जान लेना।
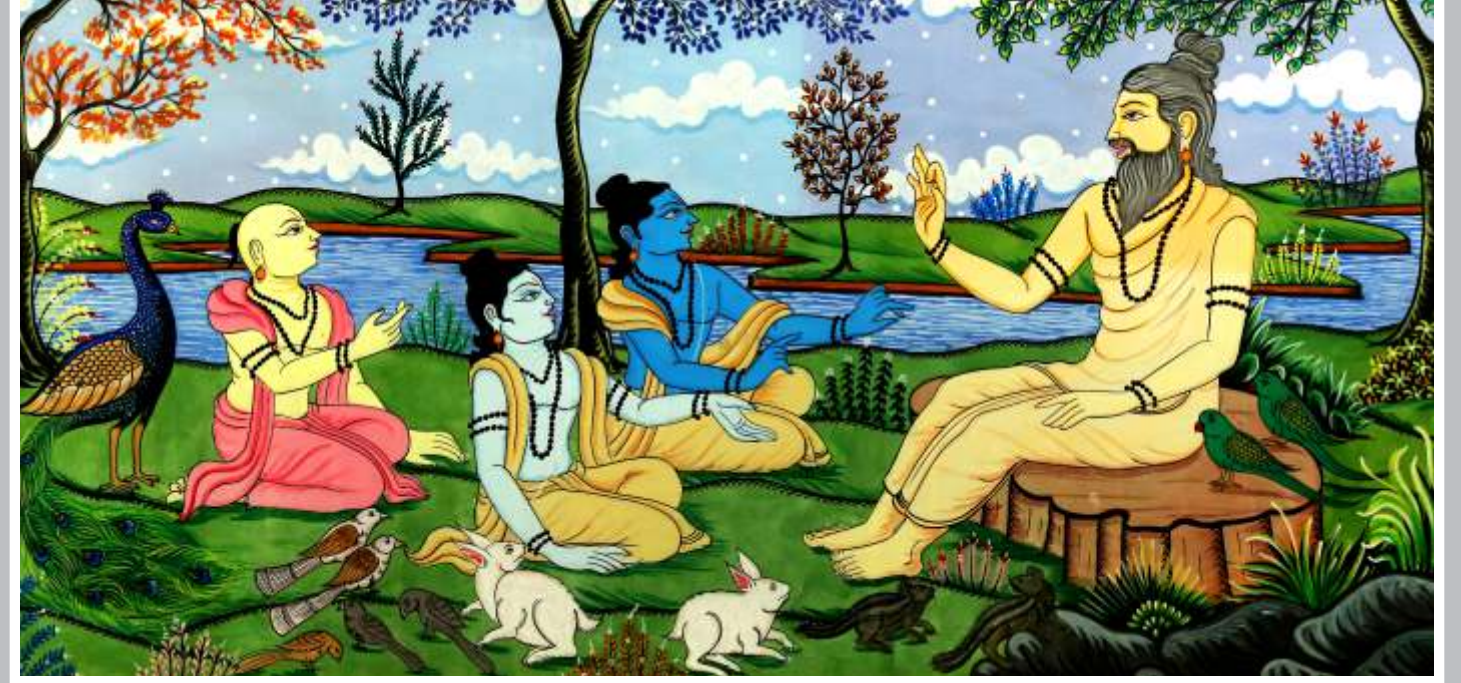
॥४६॥

म्लेच्छित विकल्प

यत्साधुशब्दोपनिबद्धमप्यक्षर, विन्यासादस्पष्टार्थं तस्य विकल्पाः।

गुप्त भाषा के विविध रूप।

॥४७॥ **देशभाषा विज्ञान**

अप्रकाश्यवस्तुज्ञापनार्थं तद्देशीयैर्व्यवहारार्थम्।

गुप्त बात कहने के लिए उस देश से व्यवहार हेतु।

॥४८॥ **पुष्पशकटिका**

पुष्पाणि निमित्तकृत्य प्रणीता।

फूलों का छकड़ा बनाना।

॥४९॥ निमित्तज्ञान

शुभाशुभादेशपरिज्ञानफलम्।

शुभ-अशुभ शकुन का फल बताना।

॥५०॥ यन्त्रमातृका

सजीवानां निर्जीवानां यन्त्राणां यानोदकसंग्रामार्थं घटनाशास्त्रम्।

स्वयं चलित और अन्य से चलित यन्त्रों का यान,
जल-संग्राम हेतु बनाने का विज्ञान।

॥ ५१ ॥

धारणमातृका

श्रुतस्य ग्रन्थस्य धारणार्थं शास्त्रम्।

सुने हुए ग्रन्थ के स्मरण का शास्त्र।

॥ ५२ ॥

संपाठ्य

संभूय क्रीड़ार्थं वादार्थं च।
तत्र पूर्वधारितमेको ग्रन्थं पठति द्वितीयस्तमेवाश्रुतपूर्वं तेन सह तथैव पठति।

मिलकर खेल या स्पर्धा के लिए एक व्यक्ति ग्रन्थ पढ़ता है
और दूसरा उस असुने को भी उसके साथ वैसा ही पढ़ देता है।

॥५३॥

मानसी

कश्चिद् व्यंजनाक्षरैः पद्मोत्पलाद्याकृतिभिर्यथास्थितानुसार, विसर्जनीय युतैः श्लोकमनुक्तार्थं लिखति।
सा दृश्यादृश्यभेदविषया द्विधा।

बिखरे अक्षरों से कमलादि आकृति के श्लोक बनाना।
यह खेल और स्पर्धा दोनों के लिए होता है।

॥५४॥

अभिधानकोष

उत्पलमालादिः।

शब्दकोष का ज्ञान।

॥५५॥ छन्दोज्ञान

पिंगलादिप्रणीतस्य छन्दसो ज्ञानम्।

पिंगल आदि द्वारा बनाये गये छन्दों का ज्ञान।

॥५६॥ क्रियाकल्प

त्रितयमपि काव्यक्रियांगं परकाव्यावबोधार्थं च।

पर काव्य समझने के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान।

॥ ५७ ॥

छलितयोग

परव्यामोहनार्थाः।
यद्रूपमन्यरूपेण संप्रकाश्य हि वंचनम्।
देवेतर प्रयोगाभ्यां ज्ञेयं तच्छलितं यथा।

बहुरूपिया बनना। देव या अन्य के रूप बनाकर छलना।

॥ ५८ ॥

वस्त्रगोपन

वस्त्रेण तद्भूयमानमपि तस्मान्नापैति त्रुटितस्यात्रुटितस्येव परिधानम्।
महतो वस्त्रस्य संवरणादिनाल्पीकरणम्।
इति गोपनम्।

छोटे कपड़े इस प्रकार पहनना कि वे बड़े दिखें और बड़े छोटे दिखें।

॥५९॥ **द्यूतविशेष**

निर्जीवद्यूतविधानम्।
तत्र ये प्राप्त्यादिभिः पंचदर्शभिरंगैर्मुष्टिक्षुल्लकादयो द्यूतविशेषाः प्रतीतार्थाः।

विभिन्न प्रकार की द्यूतक्रीड़ाओं की कला।

॥६०॥ **आकर्षक्रीड़ा**

पाशकक्रीड़ा।

पाँसे खेलना।

॥ ६१ ॥

बालक्रीड़नक

गृहकन्दुकपुत्रलिकादिभिः बालानां क्रीड़नानि।

बच्चों के खेलने के लिए पुत्तलिका आदि का निर्माण।

॥ ६२ ॥

वैनायिकी विद्या

स्वपरविनयप्रयोजनाद्वैनिक्यआचारशास्त्राणि। हस्त्यादि- शिक्षा च।

विनय अथवा आचार की विद्या। हाथी आदि को वश में करना।

॥ ६३ ॥

वैजयिकी विद्या

विजयप्रयोजना वैजयिक्यः।
दैव्यो मानुष्यश्च।

विजय दिलाने वाली विद्याएँ। वे अपराजित आदि दैव्य
और शास्त्रविद्या संग्राम की होती हैं।

॥ ६४ ॥

व्यायामिकी

व्यायामप्रयोजना मृगयाद्याः।
एतास्तिस्र आत्मोत्कर्ष- रक्षणार्था जीवार्थाः।

व्यायाम विद्या। ये तीन प्रकार की होती है- स्वयं की उन्नति,
अन्य की रक्षा अथवा जीव के लिए (कामसूत्र से)।

श्रीकृष्ण द्वारा सीखी चौदह विद्याएँ
और चौंसठ कलाएँ

दीर्घा खुलने का समय

प्रातः 7.00 बजे से रात्रि 08:00 बजे तक - प्रवेश निः शुल्क
सांदीपनि आश्रम, मंगलनाथ रोड, उज्जैनए मध्यप्रदेश
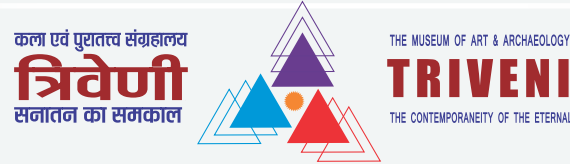
जयसिंहपुरा, उज्जैन. मध्यप्रदेश-456 006

संग्रहालय खुलने का समय

दोपहर 12:00 बजे से रात्रि 08:00 बजे तक
अवकाश-प्रत्येक मंगलवार और राज्य शासन द्वारा घोषित राजपत्रित अवकाश.

Phone: 0734-2555781 | E-mail: triveni.museum101@gmail.com